www.printo.it/pediatric-rheumatology/IN_HI/intro

अंग दर्द सिंड्रोम

के संस्करण 2016

७. ट्रांसिएंट साइनोवाइटिस

७.१. यह क्या होता है?

बच्चों में पाई जाने वाली कूल्हे की तकलीफ का यह एक प्रमुख कारण होता है।३-१० वर्ष की आयु के बच्चों में १-२% में यह तकलीफ पाई जाती है।यह तकलीफ लड़कों को अधिक प्रभावित करती है।

७.२. यह तकलीफ कितनी आम है?

यह एक मामूली प्रज्ज्वलन होता है जिसका आमतौर से कारण ज्ञात नहीं होता(इसमें जोड़ों में हल्का सा पानी ज़्यादा आ जाता है)ख़ास कर के कूल्हे के जोड़ में,और यह अपने आप बिना किसी इलाज के ठीक हो जाता है।

७.३. इस बीमारी के प्रमुख लक्षण क्या है?

कूल्हे में दर्द व् लंगड़ा कर चलना इस तकलीफ के मुख्य लक्षण है।कूल्हे में पानी, जांघ में दर्द या कभी कभी घुटने में दर्द के साथ प्रस्तुत होता है।यह दर्द एकदम से शुरू हो जाता है।इसका सबसे आम लक्षण है सुबह सुबह उठ कर लंगड़ाना या बच्चे का सुबह सुबह न चल पाना।

७.४. इस का निदान कैसे किया जाता है?

इस बीमारी के निदान शारीरिक परिक्षण के द्वारा किया जाता है।आमतौर से यह बीमारी ३-४ वर्ष के लड़कों में पाई जाती है जो देखने में बीमार नहीं लगते,जिन्हे कोई बुखार नहीं होता व् जो लंगड़ा कर चल रहे होते हैं और उनके कूल्हे परिक्षण करने पर ठीक तरह से हिल नहीं रहे होते।कूल्हे के क्ष रे पर यह दिखाई नहीं देता इसीलिए उसे करने की कोई आवश्यकता नहीं होती।लगभग ५% बच्चों में यह तकलीफ दोनों कूल्हों में पाई जाती है।

७.५. इसका इलाज कैसे किया जाता है?

इसके इलाज का आधार आराम है,जितनी तकलीफ हो उसी मुताबिक आराम करवाया जाता

है।दर्द व् प्रज्ज्वलन कम करने के लिए दर्द निवारक दवाओं का इस्तेमाल किया जाता है।

७.६. इसका प्रोग्नोसिस क्या है?

इसका प्रोग्नोसिस बहुत अच्छा होता है और १००% बच्चे ठीक हो जाते हैं(इसका नाम इसीलिए ही ट्रांसिएंट होता है)।यदि १० दिन के बाद भी इसके लक्षण यदि १० दिन से अधिक रहते हैं तब किसी दूसरी बीमारी के बारे में सोचना चाहिए।यह तकलीफ बार बार भी हो सकती है पर प्रत्येक नया एपिसोड पहले से कम तीव्र होता है व् कम समय के लिए रहता है।